www.vitalbiotech.org/krishipravahika/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 5, 3-4

Article ID: 190

बाग लगाने के लिये फलदार पौधों की रोपाई का उचित तरीका एवं देखभाल

मनीषा वर्मा[1], सद्दाम हुसैन[2], राजाराम बुनकर[3], सानिया[4] एवं राजेश मीना[5]

रिसर्च स्कॉलर, उद्यान विज्ञान विभाग, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवम् प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

भारत एक कृषि प्रधान देश है यहाँ की लगभग 75 प्रतिशत आबादी खेती पर ही निर्भर है। फल एवं सब्जियाँ मनुष्य भोजन में पौष्टिक तत्वों की पूर्ति व स्वास्थ्य के लिये महत्वपूर्ण तत्व होने के कारण यह सुरक्षात्मक खाद्य पदार्थ के रूप में पहचाने जाते हैं। फल एवं सब्जियों के प्रति बढ़ती जागरूकता तथा तेजी से हो रही जनसंख्या वृद्धि के कारण इनकी घरेलू बाजार मांग बढ़ने के साथ-साथ इनके विदेषों में निर्यात की सम्भावनाऐं भी बढ़ रही है। फलदार पौधे किसानों की नगद आय बढ़ाने एवं विदेषी मुद्रा अर्जित करने के अलावा पर्यावरण सुधार में महत्वपूर्ण रोल अदा कर सकते हैं। हाल के वर्षों में बाग लगाने के लिये किसानों की रूचि बढ़ने लगी है जिससे बागवानी क्षेत्र का तेजी से विकास हुआ है।

उद्यान की स्थापना एक दीर्घकालिन निवेष है अतः फलदार पौधों की रोपाई वैज्ञानिक तरीकों को अपनाते हुए, योजनाबद्ध विषेष सावधानियाँ रखते हुए करनी चाहिए। अधिकतम, गुणकारी एवं फल उत्पादन में स्थायित्व सुनिष्चित करने के लिये उपयुक्त भूमि एवं स्थान का चुनाव, रूपरेखा एवं रोपण प्रणाली, किस्म एवं पौधों का चुनाव आदि पर विषेष ध्यान देना आवष्यक है। इसके लिये किसानों को अनुभवी बागवानी विषेषज्ञ से सलाह लेनी चाहिए।

भूमि एवं स्थान का चुनावः उद्यान लगाने के लिये ऐसे स्थान का चुनाव करें जहाँ पाला कम पड़े और जो प्राकृतिक विपदाओं और जंगली जानवरों से सुरक्षित हो। जहाँ सिंचाई का साधन समीप हो तथा सड़क एवं यातायात की अच्छी व्यवस्था हो ताकि आसानी से पहुँचा जा सके। जहाँ तक संभव हो समतल खेत का चयन करना चाहिए। यदि खेत समतल न हो तो संस्थापन से पूर्व समतल कर लेना चाहिए। पानी निकासी की उचित व्यवस्था अवष्य होनी चाहिए।

उद्यान लगाने के लिये दोमट एवं उपजाऊ भूमि, गहरी, उचित जल निकास वाली उपयुक्त रहती है। क्षेत्र में दो मीटर की गहराई तक किसी प्रकार की सख्त, कंकर की तह नहीं होनी चाहिए। पानी का जल स्तर दस फीट से नीचा होना चाहिए। क्षारीय व अम्लीय भूमि में जहाँ तक हो सके बाग न लगायें या फिर उन्हीं फलदार पौधों को लगायें जो इनके प्रतिरोधक क्षमता रखते हों। अतः उद्यान लगाने से पहले मिट्टी का परीक्षण (जांच) अवष्य करवा लेनी चाहिए क्योंकि यह जरूरी नहीं है कि जिस जमीन में अच्छी फसल ली जा रही है उसमें फलदार पेड़ भी सफलतापूर्वक लगाए जा सकें।

मिट्टी परीक्षण: उद्यान लगाने से पूर्व मिट्टी की जांच करवाना अति आवष्यक है क्योंकि पौधों की वृद्धि पर भूमि की दषाओं का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। अतः निम्न तरीके द्वारा मिट्टी का नमूना लेना चाहिए।

- मिट्टी के नमूने ऊपरी 15 से.मी., 15 से 30 से.मी., 30 से 60 से.मी., 60 से 90 से.मी., 90 से 120 से.मी., 120 से 150 से.मी. तथा 150 से 200 से.मी. की तह से लें। एक ही स्थान से लिये गए इन सातों नमूनों को आपस में नहीं मिलाना चाहिए। इनको अलग-अलग साफ पोलीथीन की थैलियों में भरने चाहिए एवं प्रत्येक थैली में नमूने की पहचान हेतु एक कार्ड अवष्य डालना चाहिए।

सर्वाधिकार © मई, 2022; *कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका*

- मिट्टी का नमूना लेते समय जमीन में पाई जाने वाली कंकर की तह की गहराई एवं मोटाई अवष्य अंकित करें और इनका नमूना अलग से लें।

उद्यान हेतु मिट्टी जांच की अधिकतम सीमायें

क्रम संख्या	परीक्षण	किन्नों, माल्टा, मौसमी एवं नींबू	बेर, अमरूद, अनार एवं अंगूर	ऑवला, फालसा एवं करौंदा
1.	पी. एच. मान	8.5	8.7	8.7
2.	ई. सी.	0.5	1.0	2.0
3.	केल्सियम कार्बोनेट %	05	10	14
4.	चूना %	10	20	20

पौधों का चुनावः उद्यान की सफलता बहुत हद तक अच्छे फल वृक्षों के चुनाव पर आधारित है। पौधे स्वस्थ, औसत ऊँचाई के हो कलम (बडेड/ग्राफ्टेड) बांधने के बाद कम से कम एक वर्ष तक पौधषाला (नर्सरी) में रखे गये हो तथा रोग एवं कीट से मुक्त हों। इसके लिये पंजीकृत पौधषालाओं और किसी विष्वसनीय पौधषाला से स्वयं जाकर खरीदने चाहिए। बडेड/ग्राफ्ट का जोड़ भूमि से लगभग 25-30 से.मी. ऊँचा होना चाहिए। बडेड/ग्राफ्टेड भाग की बढ़वार 6 इन्च से कम नहीं होनी चाहिए तथा उस पर 10-12 पत्ते अवष्य हों। पौधों को निकालते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उनकी जड़ों को कोई क्षति न पहुचें। पौधों की खरीद का पक्का बिल अवष्य लें ताकि पौधे खराब निकलने पर उचित कार्यवाही की जा सके।

रूपरेखाः उद्यान ऐसी विधि एवं व्यवस्था द्वारा लगाया जाना चाहिए जिससे आयु के साथ पेड़ों को फैलने के लिये उचित स्थान, प्रकाष तथा वायु मिल सके और पौधों की शाखाऐं आपस में उलझें नहीं ताकी पौधों का पूर्ण विकास हो तथा उत्पादन क्षमता एवं गुणवत्ता बढ़ सके। वर्गाकार, आयताकार एवं कोणाकार आदि विधि से पौधे लगाये जा सकते हैं।